बाणभट्ट एवं उसका इतिहासलेखन

हर्षवर्द्धन का दरबारी कवि एवं लेखक बाणभट्ट अपनी रचना 'हर्षचरित' के लिए इतिहास प्रसिद्ध है। प्रथम भारतीय रचना, जिसे ऐतिहासिक माना जा सकता है, बाणभट्ट का 'हर्षचरित' है। हर्षचरित थानेश्वर एवं कन्नौज के शासक हर्षवर्द्धन की अधूरी जीवन गाथा है जो सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में लिखी गई। यह काव्यात्मक ग्रन्थ ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है जो हर्षवर्द्धन के जीवन से सम्बद्ध हैं।

बाणभट्ट का जन्म सोन नदी के किनारे बसे प्रीतिकूट गाँव में हुआ था। वह भार्गव ब्राह्मण थे तथा इतिहासलेखन, कला उन्हें वंश परम्परा से उत्तराधिकार में प्राप्त हुआ था। *उनकी माँ का नाम राजदेवी था जिनका देहान्त बाण की बाल्यावस्था में ही हो गया था। बाण जब 15 वर्षों के थे तभी उनके पिता चित्रभानु की भी मृत्यु हो गई। अतः बाण का प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त कठिन एवं कष्टमय रहा।

थानेश्वर के राजा प्रभाकर वर्द्धन के पुत्र हर्षवर्द्धन ने सिंहासनारूढ़ होने के पश्चात् राजाज्ञा देकर बाणभट्ट को बुलवा भेजा। बाणभट्ट दरबार में जाने और शामिल होने का इच्छुक नहीं था, पर राजाज्ञा का सम्मान करते हुए वह हर्ष के दरबार में आ गया। शीघ्र ही बाण की विद्वता तथा उसके अंदर उच्च कोटि के कवि को पाकर हर्षवर्द्धन ने उसे दरबार में पूर्ण प्रतिष्ठा प्रदान की तथा बाणभट्ट एक दरबारी कवि एवं इतिहास लेखक की हैसियत राजकीय संरक्षण में रहने लगा।

'हर्षचरित' हर्षवर्द्धन के दरबारी कवि, लेखक बाणभट्ट द्वारा लिखी गई। हर्षवर्द्धन एवं उसके परिवार से सम्बन्धित घटनाओं की काव्यात्मक कहानी है।

* बाण के परिवार पर पुराणों का प्रभाव पड़ा था। हर्षचरित में बाण ने अपने पूर्वजों का क्रम यह बतलाया है - कुबेर, पाशुपत, अर्थपति, चित्रभानु एवं बाण।

हर्षचरित में आठ अध्याय है जिसके अंग्रेजी अनुवाद (Cowell and Thomes) में 265 पेज हैं। इसमें हर्षवर्द्धन के शासन काल के सिर्फ प्रथम वर्ष का तथा उससे पहले की घटी घटनाओं का इतिहास है। प्रथम अध्याय में लेखक अर्थात् बाणभट्ट के वंश का इतिहास है। बाण कहता है कि च्यवन ब्राह्मण तथा क्षत्रिय कुमारी से उत्पन्न दधीचि एवं ज्ञान की देवी सरस्वती से सारस्वत का जन्म हुआ, जिसने अपने चचेरे भाई वत्स के लिए "प्रीतिकूट" नामक गाँव च्यवनाश्रम (सोनतट) में बसाया था। वत्स से वात्स्यायन वंश हुआ। बाण इसी वंश का था। इस प्रकार वह भार्गव पंक्ति का वात्स्यायन ब्राह्मण था। वह इस अध्याय में अपने पूर्वजों का क्रम भी बतलाया है - कुबेर, पाशुपत, अर्थपति, चित्रभानु तथा बाण।

दूसरे अध्याय में बाण हर्षवर्द्धन के साथ अपने परिचय की कहानी कहता है। तीसरे अध्याय में थानेश्वर का वर्णन है।

शेष पाँच अध्याय हर्ष एवं उसके परिवार से संबंधित हैं। हर्ष की बहन राजश्री का कन्नौज के मौखरी नरेश ग्रहवर्मन के साथ विवाह, पिता एवं थानेश्वर के राजा प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु, ग्रहवर्मन की हत्या और मालवा के राजा द्वारा राज्यश्री को कैदकर लिया जाना, भाई राज्यवर्द्धन का शत्रुओं के विरुद्ध अभियान एवं उसकी सफलता, गौड के शासक शशांक द्वारा राज्यवर्द्धन की हत्या, राज्यश्री का कैद से निकलकर विंध्य पर्वतों की ओर भाग जाना, हर्ष द्वारा उसे ऐसे समय में खोज निकालना जब वह सती होने की तैयारी कर रही थी, तथा राज्यश्री को लेकर गंगा के किनारे अपनी राजकीय सैनिक छावनी में वापस लौट आया। इन सारे राजनीतिक घटनाक्रमों का वर्णन हर्षचरित के शेष पाँच अध्यायों में निहित है। हर्षवर्द्धन का राज्यश्री को लेकर वापस लौटने के साथ ही बाण हर्षचरित का समापन कर देता है। ऊपरी तौर पर भले ही यह ग्रन्थ अधूरा प्रतीत होता है, वस्तुतः यह अधूरा नहीं है। बाण उन अर्थों में हर्ष का इतिहास नहीं लिख रहा था, जिन अर्थों में सामान्यतः हम इतिहास को लेते हैं। इतिहासकार V.S. Pathak का कहना है कि हर्षचरित छिटफुट राजनीतिक घटना क्रमों का वर्णन मात्र नहीं है, बल्कि एक पूर्ण कलात्मक काव्य ग्रन्थ है। बाण को हर्ष के बहन राज्यश्री से मिलन के बाद का इतिहास लिखना ही नहीं था। सम्भवतः उसे इसी सुखद अन्त तथा अपने ~~[illegible]~~ अभियान में हर्षवर्द्धन की गौरवपूर्ण

सफलता को, जिसके द्वारा उसने राज्य के गौरव को दर्शाना था,
पुनर्स्थापित किया। बाण हर्षचरित में निष्कर्ष के तौर पर लिखता है – "And there, when I was relating to my friends this story which ends with the recovery of Rajyashri, the sun also crossed the sky."

'हर्षचरित' की प्रकृति :

दोष (Demerits):– 'हर्षचरित' शुद्ध रूप में इतिहास नहीं है। यह संस्कृत साहित्य का एक दरबारी महाकाव्य है जिसमें ऐतिहासिक गद्य वर्णन भी है। इसमें कुछ ऐसे वर्णन हैं जो इतिहास से सम्बद्ध हैं। यह ग्रन्थ मुख्य रूप से जिन स्रोतों के आधार पर लिखा गया है उनमें प्रमुख हैं रिपोर्टरों के द्वारा दरबार में प्रस्तुत किये गये तथ्य तथा वे सूचनाएँ जो उस समय जनमानस में ताजा तरीन थी। कुछ ऐसे वर्णन हैं जो आँखों देखी प्रतीत होती हैं। बाणभट्ट ने हर्षचरित लिखते समय अपनी कल्पनात्मक समझ और ज्ञान को भी आधार बनाया। चूँकि हर्षवर्द्धन उसका संरक्षक था अतः हर्षचरित में चाटुकारिता एवं अतिशयोक्ति दोनों से मुक्त नहीं है।

ऐसा लगता है कि बाण ने हर्ष चरित के मुख्यपात्रों के लिए भाषण एवं परिस्थितियाँ भी तैयार कीं। यहाँ पर एक बात ध्यान देने योग्य है कि 'हर्षचरित' की रचना के पीछे बाण का उद्देश्य राजनीतिक घटनाओं का वर्णन करना नहीं था, बल्कि वह अपने संरक्षक एवं मुख्य पात्र सम्राट हर्षवर्द्धन की उपलब्धियों को दर्शाना चाहता था तथा उनके मानवीय गुणों को उजागर करना चाहता था। हर्षचरित की रचना उसने इतिहास लेखन के उद्देश्य से नहीं किया था। वह हर्ष के जीवन की दो महत्वपूर्ण उपलब्धियों पारिवारिक एवं शाही प्रतिष्ठा तथा गौरव की पुनर्प्राप्ति तथा बहन राज्यश्री के मान एवं सम्मान की रक्षा को लेकर ही बाण ने हर्षचरित की रचना की। संस्कृत भाषा की यह उत्कृष्ट रचना अभिव्यक्ति, उच्च कोटी की भाषा, शैली आदि सभी से सम्पन्न है। पर, बाण ने ग्रन्थ में धार्मिक एवं काल्पनिक ताने-बाने भी प्रस्तुत किये हैं। ग्रन्थ के दुरूह और क्लिष्ट शब्दों ने इसे सिर्फ इतिहास के रूप में ही नहीं, साहित्य के रूप में भी कठिन बना दिया है। बाण के ग्रन्थ में कुछ पन्नों में अंधविश्वासों भूत-प्रेतों, स्वप्नों आदि को भी स्थान दिया है। उस युग में

अंधविश्वास और पराशक्तियों में विश्वास मानव जीवन का हिस्सा थीं। अतः उन्हें अपने ग्रंथ में स्थान देना स्वाभाविक था। पर अविश्वसनीय बातें पुस्तक की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिन्ह लगा देती हैं। बाणभट्ट के इतिहास लेखन में एक और बड़ी कमी दिखाई देती है और वह है उसके द्वारा वर्णित घटनाओं में क्रमबद्धता का अभाव।

गुण (Merits) :- यद्यपि हर्षचरित को उन अर्थों में इतिहास नहीं माना जा सकता, जिन अर्थों में हम प्रायः इतिहास को लेते हैं। पर निश्चित रूप से यह ग्रन्थ ऐतिहासिक तथ्यों के ऊपर आधारित है। इन ऐतिहासिक तथ्यों को आसानी से हर्षचरित के साहित्यिक वर्णनों से अलग किया जा सकता है समकालीन अभिलेखों तथा अन्य स्त्रोतों के आधार पर उन राजनीतिक घटनाओं के सत्यता की जाँच की जाती है तो बाण का सत्य के प्रति समर्पण भी स्पष्ट हो जाता है। वस्तुतः बाण द्वारा वर्णित हर्ष के शासन के प्रारंभिक घटना क्रमों की पुष्टि अन्य स्त्रोतों से होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि बाणभट्ट का हर्षचरित एक ऐसा साहित्यिक ग्रंथ है जो हर्ष के जीवन से सम्बद्ध विश्वसनीय ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करता है।

बाणभट्ट के हर्षचरित में केवल हर्षकाल के ऐतिहासिक राजनीतिक घटनाओं की जानकारी नहीं मिलती। इसके वर्णनों में समकालीन सामाजिक एवं आर्थिक जीवन की भी झलक मिलती है। बाण ग्रन्थ में सभी वर्ग के स्त्रियों और पुरुषों एवं उनके कार्यों का वर्णन करता है। वह हल जोतने, चावल, गेंहूँ तथा ईख की खेती एवं पर्शियन चक्के द्वारा ईख का रस निकालने की बात भी करता है। चरवाहों की देख रेख में गीत गाते हुए जानवरों को चराने की बात करता है। इससे समकालीन सामाजिक व्यवस्था तथा पैदा किये जाने वाले प्रमुख खाद्यानों की जानकारी मिलती है। राजश्री को विन्ध्य के पर्वतों से उस समय खोज निकालना जबकि वह सती होने जा रही थी, हर्षचरित की यह घटना तत्कालीन समाज में सती प्रथा जैसी कुप्रथा को मौजूद होने की जानकारी भी देता है। यात्रियों का ताजे फलों का रस पीकर आराम से सोने का वर्णन इस बात को दर्शाता है कि हर्ष के राज्य में यात्रियों

की सुख सुविधा का पूरा ख्याल रखा जाता था। हर्षचरित में कुछ ऐसे वर्णन भी हैं जो हृदय को द्रवित कर देते हैं। जैसे - प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु एवं उसकी रानी का जल-समाधि ले लेने का दृश्य।

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि बाणभट्ट न सिर्फ एक उच्च कोटि का महाकवि एवं साहित्यकार था, निसंदेह वह एक इतिहासकार भी था। उसके हर्षचरित में हर्ष युग के राजनैतिक सम्बन्ध, विभिन्न शक्तियों का युद्धों के द्वारा एक दूसरे की सत्ता के हनन का प्रयास, दरबारी षड्‌यंत्र, अन्वेषण, हर्ष का राज्य प्राप्ति, राज्य विस्तार, ऐतिहासिक चरित्र आदि महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य तो मिलते ही हैं, साथ ही उस युग की सामाजिक व्यवस्था, समाज में व्याप्त सती प्रथा जैसी कुप्रथाओं, आर्थिक व्यवस्था आदि की भी अच्छी जानकारी मिलती है। पर हर्षचरित में राजनीतिक घटनाओं के वर्णन में क्रमबद्धता की कमी तथा ग्रन्थ में जगह-जगह पर गल्प एवं काल्पनिकता का समावेश, ये कुछ ऐसे तथ्य हैं जिनकी वजह से अधिकांश इतिहासकार हर्षचरित को एक ऐतिहासिक ग्रन्थ तथा बाण को इतिहासकार के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहते। आधुनिक इतिहासकारों के एक वर्ग उदाहरण के तौर पर डॉ. परमानन्द सिंह का मानना है कि हर्षचरित एक शुद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ तो नहीं है पर इसमें कोई संदेह नहीं कि बाण की प्रकृति हर्ष का राजनीतिक इतिहास लिखने की थी। चूँकि उसकी शैली महाकाव्यों की है इसलिए हर्षचरित को ऐतिहासीक ग्रंथ न कहकर इतिहासोन्मुख कहना उचित होगा। अतः बाणभट्ट की गणना प्राचीन भारतीय इतिहासकारों में की जा सकती है। बाणभट्ट के इतिहास लेखन को समकालीन भारतीय परम्परागत ही देखना होगा, आधुनिक अथवा पाश्चात्य परम्परान्तर्गत बाण के इतिहास लेखन का आकलन करना अनुचित होगा।